महादेवी वर्मा की कविता में करुण पुकार

अंजलि चैधरी[1], डॉ॰ सोनिका[2]

[1] शोधार्थी, ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग, कला संकाय दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट टु बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग, कला संकाय दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा

सार-यह शोध-पत्र हिंदी साहित्य की महान कवयित्री महादेवी वर्मा की कविताओं में उपस्थित करुणा और उसकी पुकार का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनकी कविताओं में करुणा केवल व्यक्तिगत वेदना का प्रतीक नहीं है, बल्कि मानवता, नारी और आध्यात्मिक चेतना का सार है। अपनी कविता में महादेवी जी ने मादक मिलन एवं विकल वियोग दोनों को ही आध्यात्म के रससिक्त धागे में पिरोया है। महादेवी वर्मा छायावाद की चतुष्टय आधार स्तंभों में से एक हैं। महादेवी वर्मा को करुणा की कवयित्री कहा गया है। उनकी कविता में करुणा, प्रेम, सौंदर्य, त्याग और आध्यात्म का विलक्षण संगम मिलता है।' दीपशिखा' और 'यामा' जैसी कृतियों में उनकी करुण पुकार एक ऐसी आन्तरिक वेदना बन जाती है जो व्यक्ति और समाज दोनों को स्पर्श करती है। महादेवी वर्मा का जीवन विरह- वेदना का समन्वित रूप है। उनके जीवन में सुख के पल कम और दुःख के पल असीमित रूप से व्याप्त हैं। इसीलिए इनकी कविताओं में पीड़ा के तत्व की प्रधानता को देखकर कुछ आलोचकों में इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा है। महादेवी वर्मा की कविता में जो करुण पुकार है वह अन्तर्मन की गहराईयों से प्रस्फुटित है। यह करुण पुकार लौकिक से अलौकिक स्तर का स्पर्श करती है। यह करुण पुकार जन- मन की करुण पुकार से भिन्न नहीं है।

इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि उनकी करुणा केवल विलाप नहीं, बल्कि सृजन की प्रेरणा और जीवन-दर्शन है।

मुख्य शब्द: करुणा, महादेवी वर्मा, नारी चेतना, आत्म पीड़ा, छायावाद, आध्यात्मिकता।

''महादेवी वर्मा की कविता में करुण पुकार''

बुध्द की अनन्त करुणा, सूफियों की विरहानुभूति, मीरा का प्रेम दीवानापन, छायावाद की प्रेम सौंदर्य व्यंजना, प्रकृति की सलौनी क्रीड़ाएँ, मधुर चित्रमयी भाषा और मोहिनी गीति शैली- इन सबको मिलकर एक ही संज्ञा है- 'महादेवी वर्मा की कविता'। अपनी कविता में महादेवी जी ने मादक मिलन एवं विकल वियोग दोनों को ही आध्यात्म के रससिक्त धागे में पिरोया है। महादेवी वर्मा छायावाद की चतुष्टय आधार स्तंभों में से एक हैं। महादेवी वर्मा को करुणा की कवयित्री कहा गया है। उनकी कविता में करुणा, प्रेम, सौंदर्य, त्याग और आध्यात्म का विलक्षण संगम मिलता है। 'दीपशिखा' और 'यामा' जैसी कृतियों में उनकी करुण पुकार एक ऐसी आन्तरिक वेदना बन जाती है जो व्यक्ति और समाज दोनों को स्पर्श करती है।

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में 26 मार्च 1907 (सम्वत् 1964 में होली के दिन) हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा, एम.ए, एल. एल. बी भागलपुर के एक कॉलेज में हेडमास्टर थे। इनकी माता श्रीमती हेमरानी देवी एक विदुषी एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उनकी हिन्दी साहित्य में अत्यन्त रुचि थी। वह यदा - कदा कविता भी लिखा करती थीं। महादेवी वर्मा के नाना भी ब्रजभाषा के कवि थे। इससे यह स्पष्ट है कि उनका जन्म विद्वान और भक्त परिवार में हुआ था।

महादेवी वर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर (मध्य प्रदेश) में हुई। यहाँ से इन्होंने छठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। घर पर संगीत एवं चित्रण की शिक्षा भी इन्हें प्रदान की गयी। तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई का साहित्य इन्होंने अपनी माताजी से ही पढ़ा। महादेवी वर्मा बचपन से ही साहित्य प्रेमी एवं भावुक थीं। आगे चलकर इनकी यही भावुकता, सहृदयता, करुणा, संवेदनशीलता, कोमलता एवं प्रकृति से तादात्म्य की भावना इनके द्वारा रचित साहित्य में यत्र- तत्र- सर्वत्र देखने को मिलती है। बाल्यावस्था से ही अपनी माता के मुख से रामायण एवं महाभारत की कथाएं सुनने के कारण उनके मन में दया, प्रेम एवं करुणा की भावना उत्पन्न हो गयी थी।

जब महादेवी वर्मा मात्र नौ वर्ष की थीं तभी इनका विवाह डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा के साथ हो गया। इससे इनकी शिक्षा का क्रम टूट गया। उनके श्वसुर लड़कियों को शिक्षा देने के पक्ष में नहीं थे। अब तक इनकी शिक्षा माता और पिता के आग्रह पर हुई थी। इसीलिए श्वसुर के देहान्त के पाश्चात ये पुनः शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुई। उन्होंने सन् 1920 में इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। युक्तप्रान्त की विद्यार्थियों में इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सन् 1924 में इन्होंने इण्ट्रेस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। और पुनः युक्तप्रान्त में इन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् सन 1927 में इण्टर, सन् 1929 में बी.ए. तथा 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) में परीक्षा उत्तीर्ण की। इस प्रकार उनका विद्यार्थी जीवन आदि से अन्त तक बहुत सफल रहा।

विद्यार्थी जीवन की भाँति महादेवी वर्मा जी की साहित्य साधना भी अत्यन्त सफल रही। बचपन से ही इनके मन में काव्य रचना के प्रति आकर्षण रहा। बड़ी होने पर अपनी माताजी द्वारा रचित पदों में अपनी ओर से कुछ कलियां जोड़ दिया करती थीं। स्वतन्त्र रूप से भी तुक बन्दियाँ करती थीं। ज्यों – ज्यों इनकी शिक्षा उन्नत होती गयी, त्यों- त्यों उनकी कविताओं में प्रौढ़ता आती गयी। यह देखकर इन्होंने अपनी रचनाएं 'चाँद' में प्रकाशित होने के लिए भेजी। हिन्दी साहित्य संसार में इन प्रारम्भिक रचनाओं का अच्छा स्वागत हुआ। इससे महादेवी वर्मा को अधिक प्रोत्साहन मिला और यह काव्य साधना की ओर अग्रसर हो गयीं।

महादेवी वर्मा की अधिकांश जीवन शिक्षा विभाग एवं साहित्य रचना में व्यतीत हुआ। एम.ए. करने के पश्चात् इनकी नियुक्ति प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य के पद पर हुई। सन् 1960 में इन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ के कुलपति पद को सुशोभित किया। सन् 1965 में इन्होंने शिक्षा विभाग से अवकाश ग्रहण किया। शिक्षा विभाग से अवकाश ग्रहण कर, ये पूर्ण मनोयोग से आजीवन साहित्य साधना में लीन रहीं। साहित्य साधना में लीन रहते हुए महादेवी वर्मा आसार संसार से 11 सितंबर 1987 को परमात्मा में विलीन हो गयी।

महादेवी वर्मा का जीवन विरह- वेदना का समन्वित रूप है। उनके जीवन में सुख के पल कम और दुःख के पल असीमित रूप से व्याप्त हैं। इसीलिए इनकी कविताओं में पीड़ा के तत्व की प्रधानता को देखकर कुछ आलोचकों में इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा है। महादेवी वर्मा के अपने ही शब्दों में, ''दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध कर रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुंच सकें किंतु हमारा एक बूंद दुःख जीवन को अधिक उर्वर बनाये बिना नहीं गिर सकता।_ _ _ विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार एक जल बिंदु समुद्र में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है।'' इसी प्रसंग में वे आगे चलकर कहती हैं- ''मुझे दुःख की दोनों रूप प्रिय हैं, एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय से सारे संसार को अविच्छिन्न बंधन में बाँध देता है और दूसरा वह है जो काल और सीमा के बन्धन में असीम चेतना का क्रन्दन है।'' वे पीड़ा में प्रियतम और प्रियतम में पीड़ा को खोजती हैं। वह सदा मिटने के अधिकार को अपने पास सँभाल कर रखने पक्ष में हैं। उनका कहना है- ''पीड़ा मेरे मानस के पट से भीगे पट सी लिपटी है।'' महादेवी जी की यह पीड़ा वैयक्तिक न होकर सामन्ती पाशों से बध्द एवं सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त भारतीय नारी की उन्मुक्त पीड़ा है। छायावादी काव्य में भारतीय नारी जीवन की सिसकती पीड़ा को जोड़ देना महादेवी के काव्य का मौलिक योगदान है।'' महादेवी जी की विशेषता यह है कि छायावाद ने व्यक्ति और समाज की जिस व्यापक असन्तोष भावना को अभिव्यक्ति दी उसमें उन्होंने भारतीय नारी के असन्तोष, निराशा और आकांक्षा का स्वर जोड़ दिया।[1]

महादेवी वर्मा के मन में मानव जाति ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, संवेदना एवं करुणा की भावना सन्निहित है-

''पथ न भूले, एक पग भी,
घर न खोये लघु, विहग भी,
स्निग्ध लौ की तूलिका से
आँक सबकी छाँह उज्जवल।''[2]

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय कवयित्री हैं। उनकी वेदना एवं करुणा प्रसूत रचनाएं हिन्दी साहित्य विशेषकर छायावादी युग की अमूल्य धरोहर हैं। यहाँ एक प्रश्न यह हो सकता है कि उनके काव्य में इतनी वेदना एवं करुणा अभिव्यक्ति क्यों और कैसे आई? इस प्रश्न के लिए हमें उनके जीवन के दो स्थलों का निरीक्षण करना पड़ेगा। इन दो स्थलों में से एक का संबंध उनके दांपत्य जीवन से है और दूसरे उनके अध्ययन और समय की प्रगति से।

महादेवी वर्मा के दांपत्य जीवन के अनुभवों के संबंध में अधिकार पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु उनकी कविताओं की अभिव्यक्ति इस बात की ओर अवश्य संकेत करती है कि उन्हें सांसारिक कटु अनुभव हुए हैं। तभी तो एक स्थान पर लिखा है- ''समता के धरातल पर सुख- दुःख मुक्त आदान- प्रदान यदि मित्रता की परिभाषा मानी जाए तो मेरे पास मित्र का अभाव है।''[3] वस्तुत उनके इसी वाक्य में उनके हृदय की समस्त वेदना छुपी हुई है। वेदना के प्रति उनके स्नेह को इसी अभाव ने विकसित और प्रसारित किया है। उनकी यही लौकिक वेदना उनकी रचनाओं में अलौकिक बन गयी हैं, इस वेदना को विकास की प्रेरणा मिली है- उनके अध्ययन उनके चिन्तन तथा उनके व्यक्तिगत एवं साहित्यिक वातावरण से। विस्मय की भावना तो उनमें बचपन से ही अद्भुत थी। अपनी माँ से, अपने वातावरण से और स्वयं अपने से कौतूहल प्रश्न करती हुई वह रहस्यमयी बनी। साथ ही उन्होंने मीरा की करुण रचनाओं, भगवान बुद्ध के सिद्धान्तों, स्वामी विवेकानन्द तथा रामतीर्थ के वैदान्तिक व्याख्यानों, वैदिक तथा आर्य समाजी सिद्धान्तों और भारतीय दर्शन से बहुत कुछ लेकर अपनी रहस्यमयी साधना का पाथेय बनाया। दुःख से उन्हें स्वभावत: मोह है। यही दुख उनके रहस्यमय का श्रृंगार है, जीवन की करुणा है।

सारांशत: हम कह सकते हैं की महादेवी वर्मा वेदना एवं करुणा की कवयित्री हैं। इस क्षेत्र से उन्हें इतना मोह है इतना लगाव है कि वह किसी अन्य प्रभाव को स्वीकार ही नहीं कर सकीं। महादेवी वर्मा की कविता में मन को छू लेने वाली जो करुण पुकार है उसके कतिपय उत्कृष्ट उदाहरण दृष्टव्य हैं-

''प्राण हँसकर ले चला जब
चिर व्यथा का भार
शून्य के विश्वास ने दी
तूलिका सी फेर,
ज्वार सत- सत रंग के
फैले धरा को घेर।
बात अणु- अणु में समा रचने लगी विस्तार।
अब न लौटने कहो
अभिशाप की यह पीर
बन चुकी स्पंदन हृदय में
वह नयन में पीर।
अमरता उसमें मानता है मरण त्यौहार।[4]

''अश्रु ने सीमित कणों में बाँध ली,
क्या नहीं घन सी तिमर सी वेदना।
क्षुद्र तारों से पथक संसार में,
क्या कहीं अस्तित्व है झंकार का।
यह क्षितिज को को चूमने वाला जलाधि,
क्या नहीं नादान लहरों से बना।
क्या नहीं लघु वारि- बूंदों में छपी
वारिदों की गहनता गंभीरता।''[5]

उपयुक्त उदाहरणों में हृदय की गहराईयों से जो करुण पुकार है वह पाठकों को द्रवीभूत करने के लिए पर्याप्त है। ऐसी कविताओं से पाठक का मन विचलित एवं उद्वेलित हो उठता है।

''क्यों अश्रु न हो श्रृंगार मुझे'' कविता में महादेवी वर्मा आँसुओं को ही श्रृंगार मान लेती हैं और उन्हें लगता है आँसुओं के रूप में उन्हें करुणा का सागर मिला।

व्यथा ही उनका इतिहास बन गयी-

''मेरी मृदु पलकें मूँद- मूँद,
छलका आँसू की बूँद बूँद,
लघुतम कलियों में नाप प्राण
सौरभ पर मेरे तोल गान,
बिन माँगे तुमने दे डाला
करुणा का पारावार मुझे ।
चिर सुख- दुख के दो पर मुझे
मैं चली कथा का क्षण लेकर
मैं मिली व्यथा का काण देकर,
इसको नभ ने अवकाश दिया
भू ने इसको इतिहास किया

अब अणु सौंपे देता है,
युग- युग का संचित प्यार मुझे।
कहकर पाहून सुकुमार मुझे।
क्यों अश्रु न श्रृंगार मुझे।"[6]

'यामा' में संग्रहीत महादेवी वर्मा की कविता "जो तुम आ जाते एक बार", में जो करुण पुकार है वह किसी से छिपी नहीं है। यह करुण पुकार रहस्यवाद का स्पर्श करती हुई उस अलौकिक सत्ता तक पहुंचती है जो इस संसार का कुशलता पूर्वक संचालन कर रही है –

"जो तुम आ जाते एक बार।
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग।
आँसू लेते वे पद परवार।
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
घुल जाता ओठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसन्त
लुट जाता चिर संचित विराग।
आँखे देती सर्वस्व वार।"[7]

महादेवी वर्मा की सर्वाधिक चर्चित एवं सुप्रसिद्ध कविता "मैं नीर भरी दुख की बद ली" में जो करुण पुकार है वह हृदय की गहराईयों से उत्पन्न एक ऐसी पुकार है जो उनके अस्तित्व को बदली के रूप में साकार करती है। इस करुण पुकार में उनके जीवन की झलक मिलती है तथा इस संसार की अस्थिरता को भी कहीं न कहीं व्यक्त करती है-

"मैं नीर भरी दु:ख की बदली।
स्पन्दन में चिर निस्पदन बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा।
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरणी मचली।
× × × ×
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।"[8]

उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा की कविता में जो करुण पुकार है वह अन्तर्मन की गहराईयों से प्रस्फुटित है। यह करुण पुकार लौकिक से अलौकिक स्तर का स्पर्श करती है। यह करुण पुकार जन- मन की करुण पुकार से भिन्न नहीं है। महादेवी वर्मा की लेखनी से विस्तृत यह करुण पुकार

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के प्रथम छन्द
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ।।
की तरह मानव मन को द्रवीभूत करती है।

ग्रन्थ सूची-

[1] हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा एम. ए. - अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 494- 495
[2] दीपशिखा- महादेवी वर्मा- लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या- 43
[3] आधुनिक कवियों की काव्य साधना- राजेंद्र सिंह गौड़, एम. ए. श्रीराम मेहरा एंड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ संख्या- 307
[4] दीपशिखा- महादेवी वर्मा- लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या- 49-50
[5] यामा- महादेवी वर्मा- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या -47
[6] दीपशिखा- महादेवी वर्मा- लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या- 97-98
[7] यामा- महादेवी वर्मा- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या- 24
[8] यामा- महादेवी वर्मा- लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या- 93- 94